# अंताक्षरी

## कहानी माला—31

# मोर का न्याय

—विजयदान देथा

# मोर का न्याय

एक था कौवा और एक था मोर। साथ साथ जंगल में लकड़ियां बीनने जाते। लकड़ियों की भारी बांधकर दोनों साथ ही अपने अपने घर आते। मोर तो लाता बड़ा भारा कौवा लेकर आता छोटी भारी। उस कौवे के थी सात बहिनें। छः बहिनें तो मोर पे बेहद गुस्सा करतीं, पर सबसे छोटी सातवीं बहिन उस पर खुश थी। गुस्से होने वाली बहिनें कहतीं-मेरे भाई के साथ साथ जाता है, हमारा कौवा भाई ही इसे लकड़ियां बताता है, पर यह कृतघ्न कहीं का खुद तो चौगुना भारा लाता है, हमको एक लकड़ी भी नहीं देता। तब छोटी बहिन समझाती- ''अपना क्या लिया, बेचारा अपने सिर पर उठा कर लाता है, बड़ी मेहनत से बीनकर इकट्ठी करता है। यह जंगल कोई अपनी



पुश्तैनी मिल्कियत तो है नहीं।''

मोर उस छोटी बहिन को मांगते ही लकड़ियां दे देता वह उसे कभी खाना खिलाती, कभी दूध पिलाती और कभी खीर मालपूवों का नाश्ता करवाती।

एक दिन लकड़ियां बीनते मोर के पांव में कांटा चुभ गया। मोर ने कहा : कौवे भाई मेरे पांव में कांटा चुभ गया, निकाल दो जरा। पर कौवे ने सुना अनसुना कर दिया। मोर ने दूसरी बार फिर कहा तो कौवे ने रूखे स्वर में जवाब दिया ''मेरे तो एक ही आंख है, ठीक दिखता ही नहीं। मोर भैया, एक आंख से कभी कांटा निकाला जाता है!''

कौवा तो लकड़ियों का भारा लेकर उड़ गया। मोर धीरे-धीरे

टहूक-टहूक कर मुश्किल से रास्ते तक पहुंचा और वहीं बैठ गया।

एक बनिये की बारात ब्याहकर के निकली। मोर टप्प से गाड़ी पर बैठ गया। दूल्हे की तरफ देखकर बोला—'मेरे सिर पर कलंगी, आपके सिर पर कलंगी, दया करके पैर में चुभा कांटा तो निकाल दो।' पर दूल्हे ने मुंह फिरा लिया, उसके पैर से खटकता कांटा नहीं निकाला। तब मोर ने दुल्हन की तरफ मुंह करके कहा—मेरे कलंगी तेरे रखड़ी, दुल्हन रानी पैर में चुभा कांटा तो निकाल दे।

दुल्हन ने उसे झिड़कते हुए कहा—चल हट यहां से, मैं किस गंदे पैर के हाथ लगाऊं। मुझे क्या पड़ी सो तेरा कांटा निकालूं।

कुमति या सुमति कोई बादलों से नहीं बरसती, वह सिर के भीतर खुद ब खुद पैदा होती है। कुछ समय बाद दूल्हे के मन में जची



कि देखें, इस मोर को सारा गहना पहिनायें तो यह कैसा लगे? पैर में कांटा चुभा हुआ है, यह उड़ तो सकता नहीं। दूल्हे दुल्हन ने मिलकर मोर को गहना पहिनाया। गले में खरे मोतियों का कंठा, पैरों में सोने की चूड़ियें और नग जड़ी अंगूठियाँ पहिनाई। यह गहना मोर की देह पर काफी खबसूरत लगा तो फिर उन्होंने कटोरदान खोलकर बाकी सारा गहना भी पहिना दिया।

दूल्हा दुल्हन दोनों मोर की सुन्दर छवि निहारने लगे कि मोर तो ढेकूं ढेकूं करके उड़ता ही नजर आया। दोनों पति-पत्नी एक साथ बोले—मोर भैया, आजा रे, तेरे पांव का कांटा निकाल दें। दूल्हा दुल्हन के मुंह की ओर देखता रहा और दुल्हन दूल्हे के मुंह की ओर। देखते देखते दोनों के चेहरों का रंग उड़ गया और मोर दृष्टि से ओझल

हो गया। दोनों सूने में अप्रतिभ होकर सूनी आँखो ताकते रहे।

मोर घर पहुंचा उसके पहले ही जोरों की बरसात आ गई। बेर जितने बड़े-बड़े ओले गिरे। हवा छूटी तो वह छूटी कि बस मत पूछो। मोर की हालत बुरी बिगड़ी। उसने पहिले कौवे की बड़ी बहिन के घर का दरवाजा खटखटाया—'बाई बाई, दरवाजा खोल ए। बाहर ओलों की तड़ातड़ में तुम्हारा मोर भैया मर जायेगा।' उसने भीतर बैठे ही जवाब दिया—मैं क्यों खोलूं भैया, मुझे तुम क्या निहाल करते हो।

मोर दूसरी कौवी के घर गया। उसने भी यही जवाब दिया। यों करते करते मोर सभी बहिनों के घर गया, उनके दरवाजे खटखटाये, पर किसी ने भी भीतर बुलाना तो दूर की बात, दरवाजा तक भी



नहीं खोला। आखिर वह सबसे छोटी बहिन के घर गया। बोला-बाई बाई, जल्दी से दरवाजा खोल ए, बाहर ओलों की तड़ातड़ में तेरा मोर भैया मर जायेगा।

उसने तो पूरी बात सुनी ही नहीं, तुरता-फुरत दरवाजा खोल दिया। भीतर आते ही सर्दी से कांपते हुए मोर पर कंबल ओढ़ा दी। अब जाकर मोर के जी में जी आया। पैर ऊँचा करके बोला- बाई बाई, कांटा निकाल ए! कहते ही उसने अपनी मेंहदी लगी अंगुलियों से कांटा निकाल दिया।

तब मोर ने फिर कहा—'बाई बाई, बिछोना करदे ए!' उसने झट बिछोना कर दिया। तब मोर बोला-'बाई बाई, आंगन लीप-पोत ए!'

उसने झट आंगन लीप-पोतकर सुथरा बना दिया। मोर ने फिर

कहा—'बाई बाई, मांडने मांड ए!' उसने झट लिपे-पुते आंगन पर रंग-बिरंगे मांडने चित्रित कर दिये। तब मोर ने फिर उसी लहजे में कहा—'बाई बाई, गीत गा ए! और उसने उसी तरह पूर्ण आत्मीयता के साथ मीठे सुर में गीत गाया। उसके बाद घी-खांड मिलाकर अपने मोर भैया को दूध पिलाया। दूध पीने के पश्चात् मोर ने ढेकूं ढेकूं करके पूछा-बाई, दाहिनी फड़फड़ाऊं कि बाई ए!

उसने कहा—'भैया, तुम्हारी इच्छा हो सो फड़फड़ाओ।' मोर ने पांखे फड़फड़ाकर छतरी तानी। गरणाटी खाकर नाचते लगा—सारे गहने हीरे मोती मांडनो से मंडित आंगन पर ठौड़ ठौड़ बिखर गये। मोर अपनी मस्ती में नृत्य करता जा रहा था और उसकी बहिन बिखरे अमूल्य गहनों को सावधानी से इकट्ठा करती जा रही थी। सारा का



सारा गहना उसने अपनी बहिन को सौंप दिया।

''दूसरे दिन बाकी बहिनों को इसका पता लगा तो वे उसी क्षण उड़ती हुई कौवे के पास पहुंचीं। ईर्ष्या से विदग्ध स्वर में उसे सारी बात बताई। कौवे ने सोचा कि बनिये की गाड़ी पर बैठने मात्र से इतना गहना हाथ लग जाता है तो इसमें ऐसी क्या बड़ी बात! वह भी गहना लेकर आ जायेगा।

उस बनिये की बारात वहीं रास्ते पर ही ठहर गई थी, इस आशा में कि शायद मोर वापस आ जाये। वह इतने सारे गहनों का करेगा भी क्या! आशा बंधा मोर तो नहीं आया, उसके बदले आया कौवा। और वह उड़ता उड़ता उसी गाड़ी पर टप्प से आकर बैठ गया। वे तो पहिले से ही तैयार बैठे थे। मोर वाले नुक्सान से उनके कलेजों

में अग्नि की लपटें उठ रही थीं। कौवे के खींचकर सड़ाक बेंत लगाई सो वह तो वहीं ढेर हो गया। बहिनें दरवाजों पर बैठी उसकी प्रतीक्षा करती रहीं। कौवा आया न कोई गहने लाया।

फिर वे सभी दौड़ी दौड़ी मोर के पास गईं। परस्पर घर ले जाने के लिए खींचतान करती रहीं। एक ने कहा—पहिले मेरे घर चलो, दूसरी ने कहा : पहिले मेरे घर चलो। किसी ने कहा कि कल मेरा सिर दुख रहा था, किसी ने पेट दुखने का बहाना बनाया तो किसी ने आंख दुखने का। किसी ने कहा कि नींद में यों ही टिप्पा मार दिया होगा। मोर भैया के दरवाजा नहीं खोलेंगी तो किसके खोलेंगी। वे तो पिता के समान उसका आदर करती हैं।

मोर ने कहा—'जंगल में जाकर शाम को वापस आऊंगा।' संध्या



होने से पहिले ही सभी मोर की बाट जोहने लगीं। सूर्यास्त होते ही मोर तो आ गया। बचन का पक्का हो तो कोई ऐसा हो। बड़ी बहिन के घर जाकर उसने कहा—'बाई बाई, दरवाजा खोल ए! बहिन तो दरवाजे से सटकर ही खड़ी थी। झट दरवाजा खोल दिया। उसने तो पहिले से ही आंगन लीप पोत कर दीप दीप बना दिया था। उतना धैर्य कहां था उसे। मोर भी उसी क्षण मांडनों पर आकर खड़ा हो गया। बोला—बाई बाई, पानी पिला ए।

उसने स्वर में मिसरी सी घोलते हुए कहा—'अपने मोर भैया को कोरामोरा पानी ही क्या पिलाऊं।' घी-खांड से भरा कटोरा पास ही रखा था। उसने पानी के बदले तुरता-फुरत हाजिर कर दिया। दूध पीकर मोर ने कहा—'बाई बाई, दाहिनी फड़फड़ाऊं या बाई ए। बहिन ने अत्यंत आत्मीयता भरे स्वर

में कहा—दोनों ही फड़फड़ाओ, मेरे राजा भैया।

मोर तो ढेकूं ढेकूं करता छतरी तानता ही नजर आया। पांखे खोलते ही भौंरे, बिच्छू, कनसलाव और सांप ठौड़-ठौड़ बिखर गये। देखते देखते सभी ने कौवी को चारों ओर से घेर लिया। कौवी ने बहुत कांव कांव किया, निहोरे किये, हाथ जोड़े किन्तु किसी ने कुछ भी सुनवाई नहीं की। उसे वहीं नोच नोच कर मार डाला। इसी भांति मोर शेष सभी बहिनों के घर गया। उनके कहे मुजब अंत में उसी तरह दोनों पांखे फड़फड़ाई और वे सभी गहनों के लोभ में मौत के पहिले ही मारी गई। मोर अपनी सबसे छोटी बहिन के साथ रहने लगा। वर्षो तक दोनों भाई बहिन सुख पूर्वक जीये और शांति के साथ रहे।

आपके जवाब के इन्तजार में
शिवसिंहसरोज
'अलारिप्पु' बी-6/62 पहली मंज़िल सफदरजंग इन्कलेव,
नई दिल्ली-29, दूरभाष : ६७०६३२७

ज्योति लेजर टाइप सेटिंग
दिल्ली-110092